हिंदी ई-पत्रिका

आपके अनुच्छेद टेक्स्ट

जी.डी.गोयंका पब्लिक स्कूल, द्वारका

हिंदी ई- पत्रिका

(जुलाई -2024)

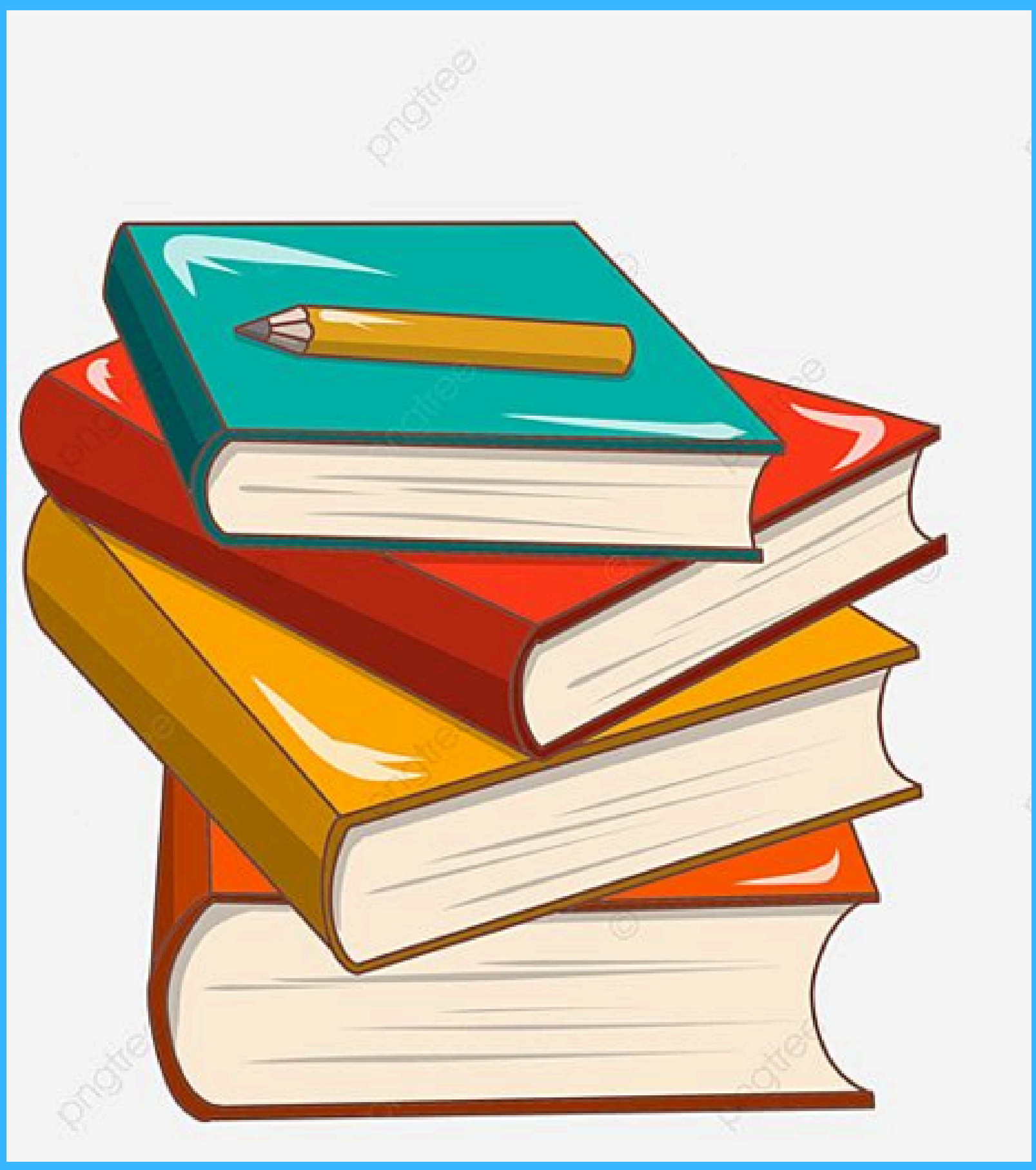

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों

एक पत्रिका किसी भी विद्यालय में अध्ययन कर रहे छात्र-छात्राओं की प्रतिभा का संकलन होती है। हमें अपने विद्यालय के छात्रों की प्रतिभा को पत्रिकाबद्ध करते हुए अत्यधिक हर्ष की अनुभूति हो रही है।

प्रतिभा कभी भी चंद मापदंडों की मोहताज़ नहीं होती जबकि प्रतिभा तो छात्रों के अंदर छिपी क्षमताओं को उजागर करने का माध्यम होती है। ये प्रतिभाएँ हमें उनके आगामी जीवन की झलक एक दर्पण की भाँति दिखाती है। जो बिल्कुल साफ-सुथरी और सुंदर अनुभूति कराने वाली होती हैं। वक्त की धूल अगर छात्रों पर पड़ भी जाए तो प्रतिभाओं की हवा उन पर जमी धूल को उड़ाकर आगे बढ़ जाती है। इस पत्रिका में हमने कोमल हृदय के भावों को सहजने का प्रयास किया है जो निर्मल और स्वच्छ है।

पत्रिका में छात्रों की रचनात्मकओं को स्थान दिया गया है। छात्रों की लेखन क्षमता को विकसित करने का प्रयास किया गया है। छात्रों द्वारा अपने भावों को बिम्बात्मक रूप में पृष्ठों पर उतारना, साहित्य के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि के समान है।

हिंदी ग्रीष्मकालीन गृह कार्य

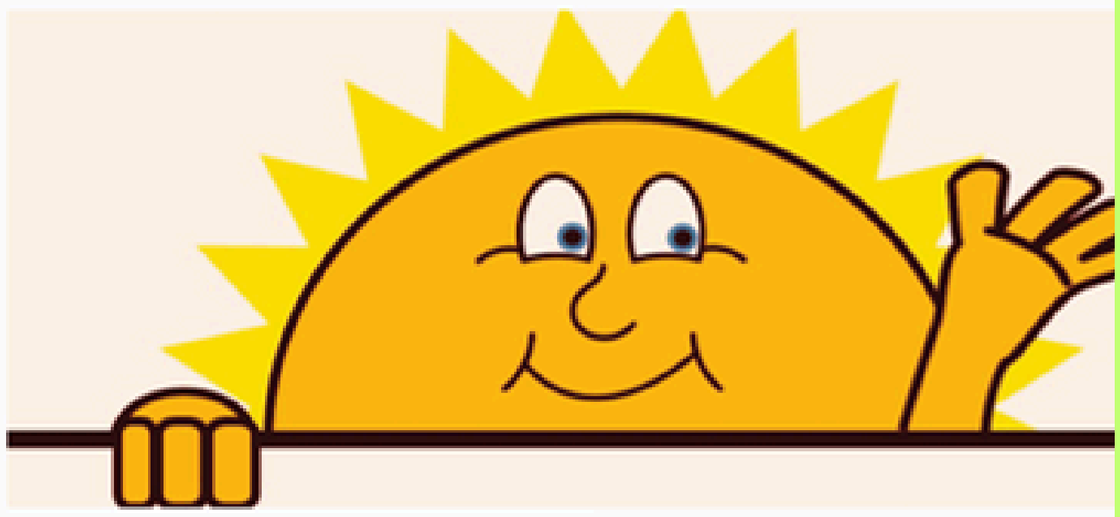

जी.डी.गोयंका पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए सृजनात्मक गृहकार्य।

जल सरंक्षण

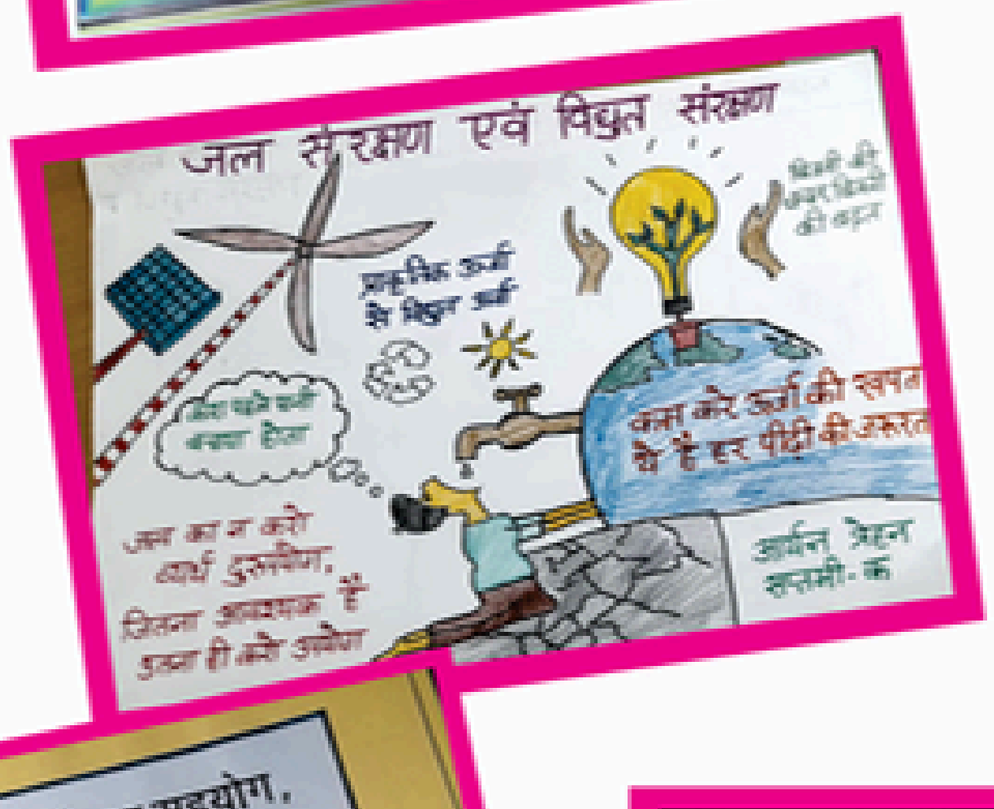

जल ही जीवन है ,मिलकर इसका संरक्षण करो
स्वयं की रक्षा के साथ अन्य जीवों की भी रक्षा करो।

जल संरक्षण

- भविष्य में जल की कमी की समस्या को सुलझाने के लिए जल संरक्षण ही जल बचाना है।

धरती पर जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने के लिये जल का संरक्षण और बचाव बहुत जरूरी है,पृथ्वी पर बिना जल के जीवन संभव नहीं है।

- पानी की कमी वाले क्षेत्रों में, बच्चे अपने मूल शिक्षा के अधिकार और खुशी से जीने के अधिकार को प्राप्त नहीं कर पाते हैं।
- औद्योगिक कचरे की वज़ह से रोज़ाना पानी के बड़े स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं।
- खेतों में पाइप से पानी देने के बजाय फुहारे से देकर आप कई गैलन पानी बचा सकते हैं।
- पानी की कमी और गंदे पानी की वज़ह से होने वाली बीमारियों से सबसे ज्यादा विकासशील देश पीड़ित है।
- हमें अपने हाथ, फल, सब्ज़ी आदि को खुले हुए नल के बजाय पानी के बर्तन से धोने की आदत बनानी चाहिए।
- पौधारोपण को वर्षा ऋतु में लगाने के लिये प्रेरित करें जिससे पौधों को प्राकृतिक रुप से पानी मिलें।
- सरकार को जागरुकता अभियान चलाना चाहिए।

आरव यादव
कक्षा-छठी अ

लक्षद्वीप

घूमते हुए बच्चे पहुँच गए लक्षदीप संस्कृति जानी

परंपरा पहचानीऔर लिख दी नई कहानी

लक्षद्वीप एक परिचय

भाषा और धर्म

लक्षद्वीप के लोगों की जुबान पर मुख्य रूप से महल और मलयालम भाषाएँ हैं लेकिन, ज़्यादातर स्थानीय लोग अंग्रेज़ी, तमिल, हिंदी,उर्दू, बंगाली और उड़िया भी बोलते हैं।
सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार लक्षद्वीप के अधिकांश लोग इस्लाम धर्म को मानते थे। इन विदेशी द्वीपों में हिंदू और ईसाई धर्म का भी समान रूप से पालन किया जाता है।

खाना

लक्षद्वीप में खाने के लिए बहुत कुछ है। समुद्री भोजन इन द्वीपों में भोजन का मुख्य स्रोत है, लेकिन शाकाहारियों के लिए भी यहाँ बहुत सारे व्यंजन है। इन द्वीपों में परोसा जाने वाला भोजन बहुत मसालेदार होता है और उनके व्यंजनों में नारियल का स्वाद बहुत अधिक होता है।

स्थानीय त्योहार, कला और संगीत

लक्षद्वीप के स्थानीय लोगों द्वारा स्थानीय त्योहारों के शानदार उत्सव को देखने के बाद, द्वीपों के शानदार संगीत और नृत्य प्रदर्शन के बारे में वर्णन करने के लिए शब्दों की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। लक्षद्वीप के लोग अपनी कला में
बहुत अच्छे और कुशल है और यह उनके द्वारा बनाई गई हस्तकला की वस्तुओं से बहुत स्पष्ट होता है।

वैभव - सातवीं एफ

एक सखी और एक सखा ,आओ बच्चों लिखें कथा कुछ तुम्हें पता कुछ मुझे पता आओ मिलकर लिखे चित्रकथा।

चित्रकथा
पिताजी हम यह क्यों करते हैं?
वृक्षारोपण से न केवल मिट्टी का कटाव रुकता है बल्कि पानी भी संरक्षित रहता है।

दादा जी अपने बाग में पौधा लगा रहे थे
दादा जी आप क्या कर रहे हैं।

प्राकृतिक संसाधनों का महत्त्व

हैलो राम, आज मुझे प्राकृतिक संसाधनों का महत्त्व के बारे में पता चला। मैं तुम्हें इसके बारे में बताना चाहता हूँ।

हैलो रमन।
जरूर, मुझे इसके बारे में जानकारी पाकर खुशी होगी। और मैं तुम्हें सदा संरक्षण के बारे में बताना चाहूँगा।

प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग हमारे जीवन और पर्यावरण के लिए अत्यंत आवश्यक है। बिजली या पानी को प्राकृतिक तरीकों से उत्पन्न करके हम पर्यावरण को कम नुकसान पहुँचाते हैं और साथ ही अपने स्वास्थ्य को भी सुधार सकते हैं।

बिल्कुल सही कहा रमन। हमारी अध्यापिका जी ने भी कहा है कि, प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग से कम कार्बन फुटप्रिंट छोड़ने में मदद होती है। और हम पर्यावरण को बचा सकते हैं।
नई तकनीकों का उपयोग करके हम अधिक समृद्ध और संपन्न जीवन व्यतित कर सकते हैं और वो भी बिना पर्यावरण को नुकसान पहुँचाये।

प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग हमारे सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसका उपयोग करके अधिक लोगों को समृद्धि और रोजगार मिल सकता है।
इस प्रकार, प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करके हम मानव निर्मित संसाधनों की अपेक्षा अधिक समृद्ध और संपन्न जीवन व्यतीत कर सकते हैं, जो पर्यावरण और समाज के लिए अधिक हितकर है।

मृदा संरक्षण

मृदा संरक्षण भी एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। यह ना सिर्फ हमारे पर्यावरण को सुरक्षित रखना है, बल्कि यह भी हमारे जीवन और भविष्य के लिए आवश्यक है।

बिल्कुल सही कहा, राम। मृदा की रक्षा वनों के लिए मुख्य है। वनस्पति हमारी मृदा को बचाने में मुख्य भूमिका निभाती है। वृक्ष, पेड़, पौधे और वनस्पति के अन्य प्रकार का संरक्षण करके हम प्रकृति की रक्षा कर सकते

मृदा संरक्षण कृषि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह फसल उत्पादन में वृद्धी को बढ़ाता है। यह विभिन्न प्राणियों और वनस्पतियों के जीवन का आधार है। मृदा संरक्षण का महत्त्व हमारे जीवन और पर्यावरण के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसलिए हमें मृदा को सुरक्षित रखते हुए प्रकृति की ओर जिम्मेदारी से व्यवहार करना चाहिए।

गाँव की सभा : रामू गाँववालों से –
दोस्तों! हमें फिर से प्रकृति की ओर लौटना होगा। हमें जैविक खाद, वृक्षा रोपण, फसल चक्र आदि तकनीकों को अपनाना चाहिए। इससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ेगी और फसलें भी अच्छी होंगी।
लेकिन, क्या यह वास्तव में काम करेगा?
हाँ बिल्कुल। हमारे बुजुर्ग प्रकृति के साथ मिलकर काम करते थे और समृद्ध थे।
रामू और सुरेश गोबर और पत्तों से जैविक खाद बनाते हुए –
यह हमारी मिट्टी के लिए अमृत साबित होगा।
हाँ रामू। यह जैविक खाद बहुत ही अच्छी लग रही है। इसे बनाने में ज्यादा खर्च भी नहीं आया।
जैविक भारत
गाँव में वर्षा हो रही है। खेतों के आस-पास जल संचयन के लिए छोटे तालाब बनाए गए हैं।
देखो, तालाबों में कितना पानी जमा हो गया है। अब हमें सूखे का डर नहीं रहेगा और फसलें भी अच्छी होंगी।
रामू की सलाह ने फुलेरा गाँव को खुशहाली से भर दिया। सभी उसके आभारी थे। इस बार फसलें बहुत अच्छी हुई और मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ी।
गाँववालों की सामूहिक मेहनत और प्रकृति के प्रति आदर ने उन्हें सफलता दिलवाई। अंत: गाँव के लोग अपने खेतों में खुश होकर काम करने लगे। उन्होंने मानव निर्मित संसाधनों की अपेक्षा प्राकृतिक संसाधनों को चुना और प्रकृति तथा मनुष्य के बीच सामंजस्य का सुंदर दृश्य प्रस्तुत किया।

लेरा गाँव - किसान रामू अपने खेतों में मेहनत कर रहा है। गाँव के लोग पहले
ृतिक संसाधनों का उपयोग करते थे, लेकिन अब कृत्रिम साधनों का प्रयोग
ढ़ गया है।
रामू और सुरेश खेत में काम करते हुए; फसलें मुरझाई हुई दिख रही हैं।
रामू भाई, फसलें इस बार भी अच्छी नहीं हो रही हैं। हर साल उपज घटती जा रही है। क्या हम कुछ गलत कर रहे हैं?
गंभीर स्वर
सुरेश, हमें सोचने की जरूरत है।
त्रिम खाद और कीटनाशकों का उपयोग मिट्टी की
रता को घटा रहा है।
मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाने के लिए और मृदा अपरदन की रोकथाम के लिए हमें जरूरी कदम उठाने होंगे। हमें पंचायत बिठाकर इस बारे में निर्णय लेने होंगे। सभी गाँववालों को जैविक खाद, वृक्षारोपण फसल चक्र आदि का महत्व समझाना होगा
वृक्षारोपण
हमारी मिट्टी का सबसे उपजाऊ भाग नष्ट हो रहा है
जिसमें फसलों के लिए अधिकांश पोषक तत्व

वृक्षारोपण

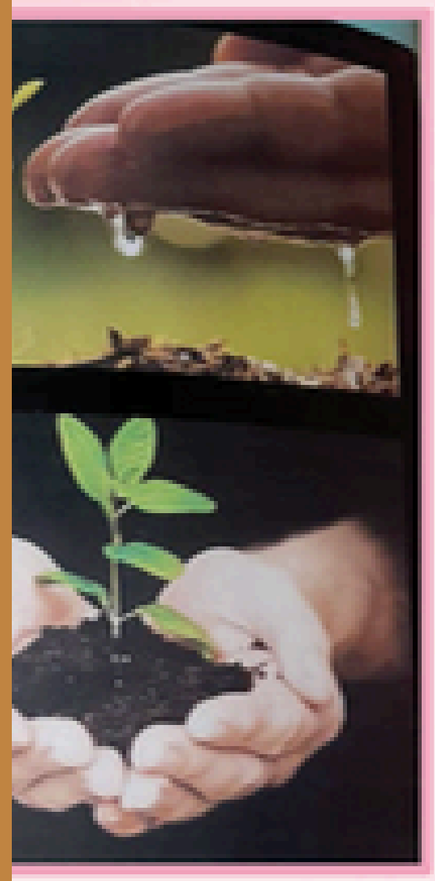

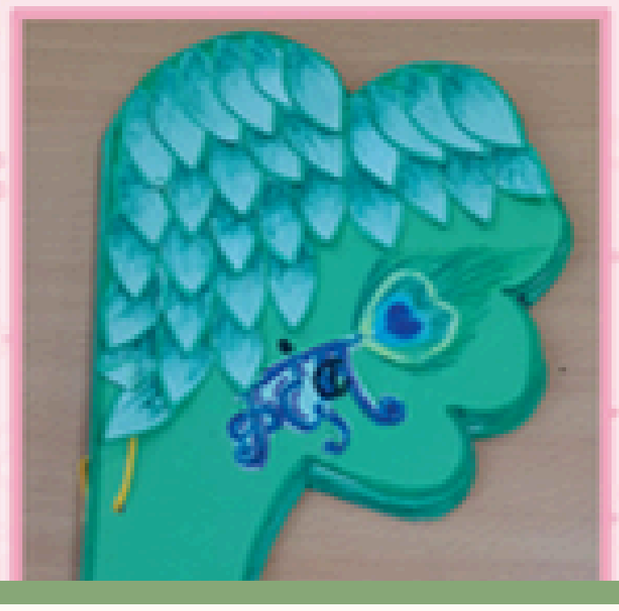

वृक्ष लगाओ, धरा सजाओ हर आँगन में जन -जन तक यह संदेश
पहुँचाओं वृक्ष हमें देते है जीवन किसी भी कीमत पर इन्हें बचाओ

कक्षा-दसवीं और बारहवीं के विद्यार्थियो ने वृक्षारोपण गतिविधि में भाग लिया और लोगों को प्रकृति की ओर संवेदनशील होने का संदेश दिया।

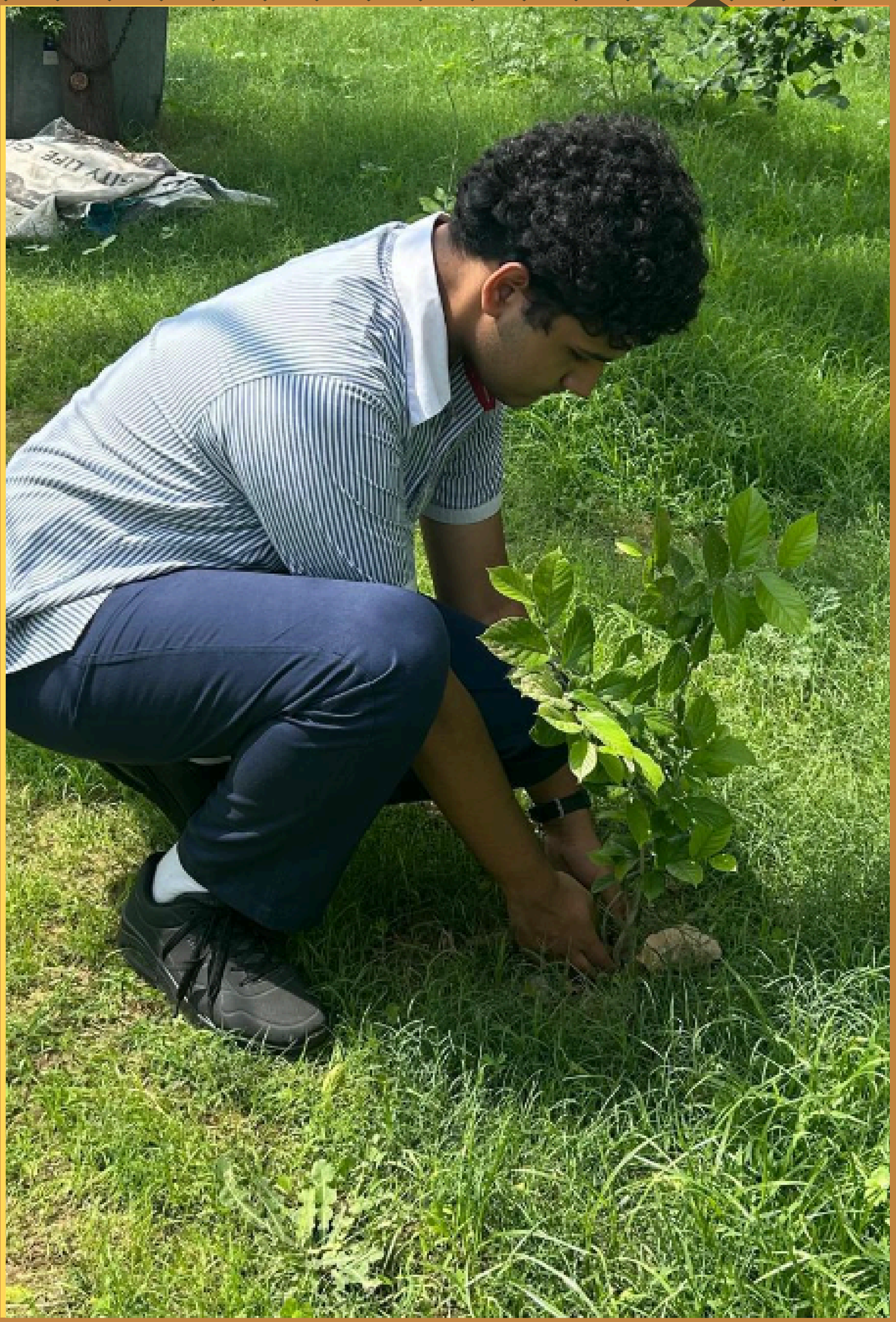

कक्षा नवीं और दसवीं विवरणिका बनाओ गतिविधि के अंतर्गत सुंदर विवरणिकाएँ बनाई गई।

हिंदी माह की झलकियाँ

हिंदी भाषा और साहित्य ने तो जन्म से
ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा है।
हिंदी द्वारा सारे भारत को एक
सूत्र में पिरोया जा सकता है।
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति
को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न
हिय को शूल॥
भारत मां के भाल पर सजी
स्वर्णिम बिंदी हूं,
मैं भारत की बेटी आपकी
अपनी हिंदी हूं॥
वक्ताओं की ताकत भाषा। लेखक का अभिमान है भाषा॥
भाषाओं के शीर्ष पर बैठी।
मेरी प्यारी हिंदी भाषा॥

पुस्तक पर चर्चा वंदना यादव जी के द्वारा

एक मुलाकात: हिंदी रचनाकार के साथ

दिनांक 16.07.2024 को हिंदी की जानी- मानी लेखिका **श्रीमती वंदना यादव जी** अपनी पुस्तक " **अब मंज़िल मेरी है**" पर परिचर्चा करने विद्यालय में आईं थी।उन्होंने छात्रों को लक्ष्य निर्धारित करने, तैयारी करने, अपनी रुचियों पर काम करने की सलाह दी।विद्यार्थियों ने भी ना केवल इस परिचर्चा में भाग लिया बल्कि मनभावन कविताएँ सुनाकर, चटपटे और रोचक सवाल पूछकर सभा के माहौल को जीवंत कर डाला।

विद्यालय की प्रधानाचार्या **श्रीमती अनीता खोसला जी** ने नवांकुर पौधा भेंट कर उन्हें सम्मानित किया और इन पंक्तियों से उनका स्वागत किया:-

यूँ तो अक्सर हम मिलते है ,
जाने-अनजाने लोगों से,
गपशप भी करते है खूब,
मगर रु-ब-रु हों हम किसी लेखिका से ,
तो उनके साथ हुई ये मुलाकात यादगार बन जाती है ।
और उनसे हुई बातचीत ,फिर साहित्यिक हो जाती है।

उपप्रधानाचार्या **श्रीमती बिमला बिष्ट जी** ने परिचर्चा के अंत में उनका आभार व्यक्त किया और छात्रों में रचनात्मक लेखन के प्रति रुझान उत्पन्न किया।

हिंदी विभाग

हिन्दी परियोजना

सेलुलर जेल

यह जेल अंडमान निकोबार द्वीप की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में बनी हुई है। यह अंग्रेजों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को कैद रखने के लिए बनाई गई थी। यह काला पानी के नाम से कुख्यात थी। कालापानी यानि स्वतंत्रता सेनानियों इन अमानवीय यातनाओं और तकलीफों का सामना करने के लिए जीवित नरक में भेजना जो मौत की सजा से भी बदतर था।

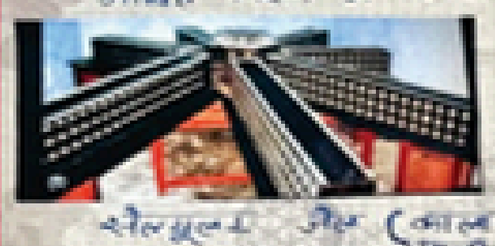

सेलुलर जेल (काला पानी)

स्वतन्त्रता सेनानियों के नाम

सुखदेव थापर (1907-1931)

अंडमान जेल का मानचित्र

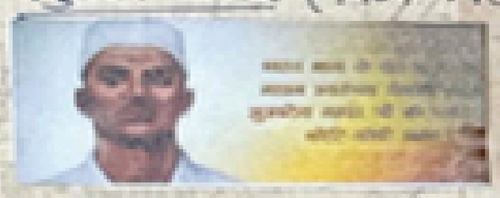

राजगुरु (1908-1931)

इन सभी स्वतन्त्रता सेनानियों ने भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे अपने साहस, बलिदान और दृढ़ संकल्प के लिए याद किए जाते हैं।

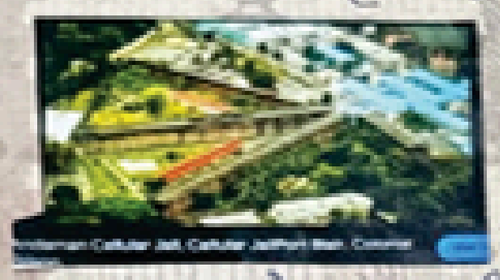

भगत सिंह (1907-1931)

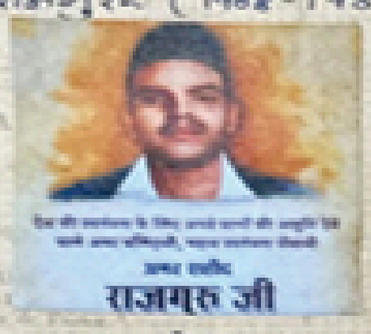

बिपिन चंद्र पाल (1858-1932)

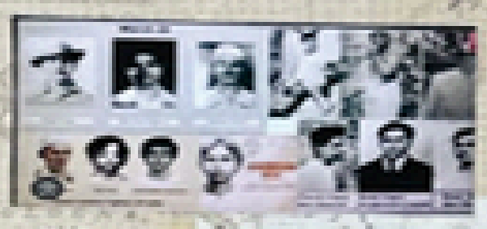

हेजलीना सिंह
कक्षा [illegible]

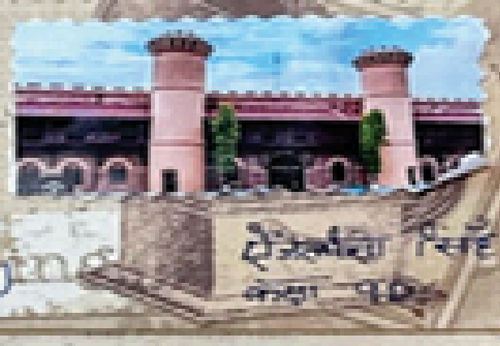

दंड विधान प्रक्रिया

इस जेल में बंद क्रांतिकारियों पर बहुत जुल्म ढाया जाता था। क्रांतिकारियों से कोल्हू से तेल पेरने का काम करवाया जाता था। हर कैदी को 30 पाउंड नारियल और सरसों को पेरना होता था। यदि वह ऐसा नहीं कर पाता था तो उन्हें बुरी तरह से पीटा था और बेड़ियों से जकड़ दिया जाता था। ये सजा मौत से भी बदतर मानी जाती थी क्योंकि इसमें व्यक्ति को जिंदा रहते हुए वो कष्ट सहने पड़ते थे, जो मौत से भी ज्यादा दर्दनाक होते थे और तड़पते हुए मौत होती थी।

काला पानी की सजा क्यों दी जाती थी?

काले पानी की सजा अंग्रेज सरकार, भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को देती थी। इस सजा के तहत क्रांतिकारियों को अंडमान निकोबार की "सेलुलर जेल" में रखा जाता था ताकि वो कभी वहां से निकल ही न पाए। वहां चारों ओर समुद्र है। उन्हें भोजन के लिए [illegible] जाता था, वे अनेक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। [illegible] जैसा [illegible] नहीं करवाया जाता था। यह [illegible] में [illegible] दंड था।

हेजलीना सिंह

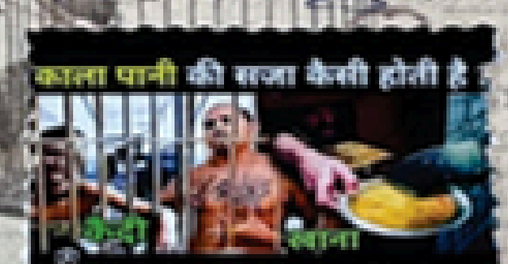

अनुभव की कलम से

बार - बार

बार- बार गिरने में,
होती कोई हार नहीं।
आदमी हूँ मैं केवल,
ईश्वर का कोई अवतार नहीं ।
गिरता हूँ, उठता हूँ,
चलता हूँ, दौड़ता हूँ, भागता हूँ,
जीत संक्षिप्त है ।

प्रयास सत्य है,
विस्तृत है,
अनुभव का कभी खट्टा
तो कभी मीठा-सा फल है।
बस यही गिरकर , उठना ही,
मेरे जीवन का सार है,
क्योंकि
आदमी हूँ मैं केवल,
ईश्वर का कोई अवतार नहीं ।

अचिंत्य शर्मा

कक्षा:- बारहवीं 'ए‘

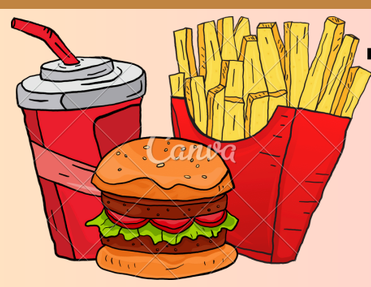

जंक फूड

बर्गर -पिज्ज़ा ज्यादा मत खा भाई, बीमारियों ने घर के बाहर लाईन लगाई।

पेट दर्द, सर दर्द हो रहा है भाई ,तो ताज़ी रोटी खा, ठंडा शरबत पीले भाई ,बढ़ रहा है अगर तुम्हारा वज़न तो सरकार ने पार्क में व्यायाम की मशीन लगाई, सुबह नहीं तो शाम को टाईम निकालो भाई, टाईम निकालो भाई, नहीं तो नई बीमारी अब आई अब आई।

स्वस्थ शरीर ही हमारे जीवन की कमाई काहे ये सुंदर- सी काया विशालकाय बनाई, नई आफ़त यूँ आई और यूँ आई। मैदा तो हमने खाया पर पेट ने करी भरपाई सूज गई अंदर की आँतें सेहत पर बन आई ग्लूकोज चढ़ाओ सुई लगाओ,

डॉक्टर की आवाज़ आई, कान बंद कर लिए मैंने ये क्या आफ़त आई ये क्या आफ़त आई ज्यादा जंक फूड ने सारी दुनिया बीमार बनाई, मोटी-मोटी गोली खाकर जब थक गई मैं भाई तब मुझे अक्ल

आई हरी सब्जियाँ पहले क्यों न खाई क्यों न खाई

माता-पिता की बात पहले समझ में क्यों न आई?

जंक फूड जिससे लोगों ने की कमाई ईमानदारी किसने और कहाँ निभाई।

माता-पिता दे रहे दुहाई हमारे बच्चों की जान पर बन आई। जंक फूड की बला कहाँ से आई कहाँ से आई, इसका उत्तर कोई तो दो भाई, यह बात हमारी समझ में न आई।

हुनर

कक्षा- छठी 'ए'

रेडियो जॉकी की कुछ झलकियाँ

जी.डी .गोयंका पब्लिक स्कूल, द्वारका में हिंदी माह के अंतर्गत 23.7.2024 को अंतरसदनीय रेडियो जॉकी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता साक्षात्कार विधा में प्रस्तुत की गई। प्रतिभागियों ने भारत के प्रसिद्ध खिलाड़ियों के रूप में साक्षात्कार दिए। जिसमें उन्होंने उनके जीवन की उपलब्धियों और संघर्षों के बारे में बताया, साथ ही श्रोताओं को संदेश दिया कि लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मेहनत और दृढ़-निश्चय की आवश्यकता होती है।

आपके अनुच्छेद टेक्स्ट

अंतरसदनीय रेडियो जॉकी
प्रतियोगिता
कक्षा:6-12

अंतरसदनीय रेडियो जॉकी
प्रतियोगिता
कक्षा:6-12

अंतरसदनीय रेडियो जॉकी
प्रतियोगिता
कक्षा:6-12

हिंदी.प्रार्थना सभा की कुछ झलकियाँ

जी.डी.गोयंका विद्यालय में हिंदी माह के अंतर्गत हिंदी साहित्य को आधार बनाकर हिंदी प्रार्थना सभा/असेंबली का आयोजन 25 जुलाई, 2024 को किया गया । विद्यार्थियों ने हिंदी साहित्य की यात्रा को दर्शाते हुए विभिन्न रसों से सराबोर कविताओं का गायन करते हुए सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कबीरदास जी के दोहों तुलसी के पद “ठुमक चलत रामचंद्र” से लेकर छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की काव्य पंक्तियों से प्रार्थना सभा गूँज उठी । उपप्रधानाचार्य जी श्रीमती बिमला बिष्ट जी ने सभी प्रतिभागियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा हिंदी भाषा से संबंधित जानकारी साझा कर विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन किया।

G.D.GOENKA PUBLIC SCHOOL,DWARKA

G.D.GOENKA PUBLIC SCHOOL,DWARKA

हास्य कविता की झलकियाँ

जी.डी.गोयंका पब्लिक स्कूल में प्रतिवर्ष हिंदी माह के अंतर्गत प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इसी क्रम में हिंदी प्रतियोगिता अंतर्गत दिनांक 24.7.2024 को 'अंतरसदनीय हास्य कविता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में सभी सदनों के छात्र छात्राओ ने विभिन्न विषयों जैसे- बढ़ते हुए पेट्रोल के दाम, जल संकट, पारिवारिक नोक-झोंक और कंप्यूटर में वायरस आदि विषयों पर हास्य कविताएँ सुनाकर निर्णायक मंडल और वहाँ उपस्थित विद्यार्थियों का मन मोह लिया था। इस प्रकार छात्रों के प्रशंसनीय प्रयासों के द्वारा 'हँसी की फुहार ' कार्यक्रम संपन्न हुआ था।

विज्ञापन प्रतियोगिता

जी.डी. गोयंका पब्लिक स्कूल, द्वारका में हिंदी माह के अंतर्गत 29.07.2024 को अंतरसदनीय 'विज्ञापन बनाओ' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में छात्रों ने पर्ची द्वारा अपना विषय छाँट कर अपना प्रस्तुतीकरण दिया। छात्रों द्वारा दी गई प्रस्तुति की निर्णायक मण्डल ने भी प्रशंसा की।

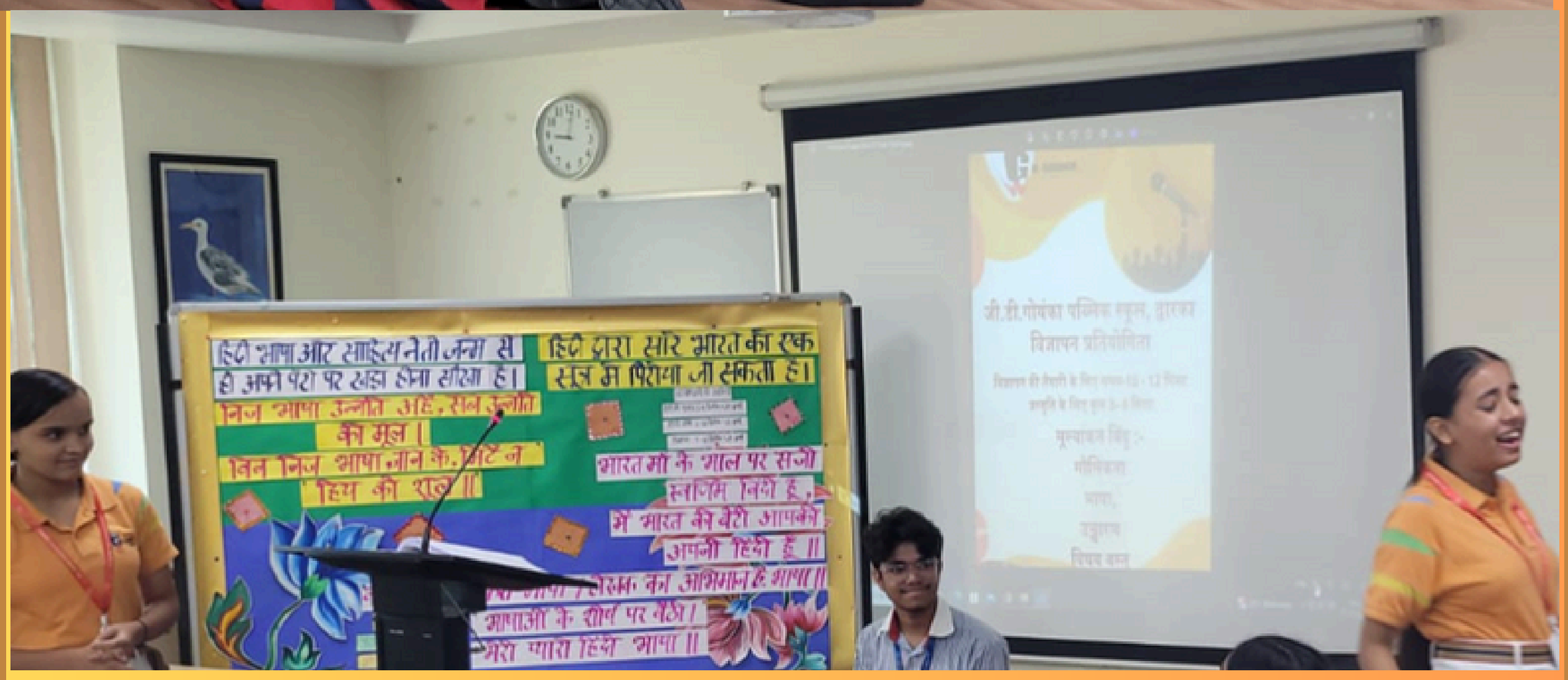

हिंदी भाषा और साहित्य ने तो जन्म से
ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा है।
हिंदी द्वारा सारे भारत को एक
सूत्र में पिरोया जा सकता है।
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति
को मूल।
भारत माँ के भाल पर सजी
स्वर्णिम बिंदी हूँ,
मैं भारत की बेटी आपकी
अपनी हिंदी हूँ॥
भाषाओं के शीर्ष पर बैठी।
मेरी प्यारी हिंदी भाषा॥

सृजनात्मक चिंतन का आशय उन कार्यों से है जिनके माध्यम से नवीन विचारों, वस्तुओं एवं व्यवस्थाओं का सृजन संभव होता है।

प्रो. एस . के . दूबे

धन्यवाद